प्रेमचन्द : गोदान कृषक जीवन की दास्तां

कविता कुमारी
नरवाना जीन्द (हरियाणा)

शोध–आलेख सार

प्रेमचन्द का सम्पूर्ण रचना संसार भारतीय नवजागरण और पीड़ा का जीवंत दस्तावेज रहा है। 'गोदान' में दमन की चक्की में पिसते मुख्य पात्र होरी के माध्यम से कृषक जीवन की दास्तां लिखी गई है। ये खेतीहर अपने खेतों में दिन–रात सपरिवार जी–तोड़ मेहनत करते हैं और चाहते हैं कि इसी आधार पर मर्यादा के साथ जीवन व्यतीत करते रहे; संसार के शोषण उनका जीना दूभर कर देते हैं। इनका इतना शोषण होता है कि वे ऋणग्रस्त हो जाते हैं खेतों में अन्न पैदा करने वाले होकर भी दाने–दाने को मोहताज हो जाते हैं। इनका जीवन इतना अभावग्रस्त और अभिशप्त हो जाता है कि एक गाय को प्राप्त करने की अभिलाषा भी कभी पूरी नहीं हो पाती तथा होरी जैसा किसान अपने बैलों, खेतों आदि से भी हाथ धो बैठता है। प्रेमचन्द गॉव के रहने वाले थे उन्होंने ग्रामीण किसानों की दुर्दशा को अच्छी प्रकार से देखा था अतः उन्होंने 'गोदान' में मुख्यरूप से तत्कालीन भारतीय किसान के चरित्र को सच्चे मन से चित्रित किया है। 'गोदान' में भारतीय किसान का जीता–जागता स्वर अंकित किया गया है।

© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

मुख्य–शब्द : ऋणग्रस्त जीवन, ब्राह्मणों व पंचों के उपासक, भाग्यवादी और परिश्रमी, गाय की अभिलाषा, शोषण के शिकार, मर्यादा के रक्षक, अभिशप्त जीवन।

ऋणग्रस्त जीवन : भारतीय किसान ऋणग्रस्त पैदा होता है जीवन भर ऋणी रहता है। ऋण का बोझ उतारते–उतारते भी वह समाप्त नहीं होता और ऋणी होकर मरता है। 'गोदान' का होरी जैसे–जैसे ऋण अदा करता रहा, ऋण वैसे ही बढ़ता चला गया। वह खेतों में खूब काम करता है। गर्मी हो या सर्दी, बरसात हो या तेज हवा, उसका कर्त्तव्य पैदावार बढ़ाना है। लेकिर कभी 'सूख' जैसी प्राकृतिक आपत्ति उसके परिश्रम को मिट्टी में मिला देती है तो कभी जमींदार के कारिंदे, पटवारी, दरोगा, गॉव के साहूकार आदि उसकी सारी खेती को खलिहान से ही उठा ले जाते हैं और वह फिर भूखा का भूखा रह जाता है। स्वयं कृषक होरी एक दिन इस विषय में कहता है–

''इस फसल से सब कुछ खलिहान में तौल देने पर भी अभी उस पर कोई तीन सौ कर्ज था, जिस पर कोई सौ रुपए सूद के बढ़ते जाते थे। मॅगरू साहू से आज पॉच साल हूए, बैल के लिए साठ रुपए लिए थे, उसमें साठ दे चुका था; पर वह साठ रुपए ज्यों–के–त्यों बने हुए थे। दातादीन पण्डित से तीस रुपए लेकर आलू बोए थे। आलू तो चोर खोद ले गए, और उस तीस के इन तीन बरसों में सौ हो गए थे। दुलारी विधवा सहुआइन के चालीस रुपए भी लगभग सौ रुपए हो गए। लगान के भी अभी पच्चीस रुपए बाकी पड़े हुए हैं।''[1]

इस प्रकार होरी कर्जे से दिनरात लदा जाता है। वह नहीं चाहता कि किसी से भी एक पैसा कर्जे में लेना पड़े और यदि कर्ज ले तो एक–एक पाई चुका दें, परन्तु उसे कोई भी रास्ता दिखाई नहीं देता। यह भी निश्चित था कि इस कर्ज को वह कभी अदा नहीं कर सकेगा। इस कर्ज को अदा करने के लिए उसे अन्य कर्ज लेना पड़ता था। मगर संतोष था तो यही कि यह विपत्ति अकेले होरी के सिर न थी। प्रायः सभी किसानों का यही हाल था। अधिकांश की दशा तो इससे भी बदतर थी। होरी भोला को अपने कर्ज की कथा सुनाता है–

''जमींदार तो एक ही है, मगर महाजन तीन–तीन हैं, सहुआइन अलग और मॅगरू अलग और दातादीन पण्डित अलग। किसी का ब्याज भी पूरा न चुका।''[2]

'गोदान' में प्रेमचन्द ने किसानों के जीवन को चित्रित करते समय इसका संकेत किया है कि भारतीय किसान का जीवन ऋण से अभिशप्त है।

Note : For Complete paper please contact us info@jrps.in

Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper